विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 46, अगस्त -2024

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई- पत्रिका, अगस्त – *2024*

ज्ञानोदय (अंक-46)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाशवीर(प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह,

ब०प्रतीक्षा दीक्षित

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- हिन्दी विषय के क्रियाकलाप
- लेख-(उत्सव, जयन्ती एवं दिवस)
  - शिक्षक दिवस
  - हिन्दी दिवस
  - पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती
- सेवा वस्ती के भैया/ बहिनों को बैग वितरण
- मेहंदी प्रतियोगिता
- सहज योग ध्यान
- तुलसीदास जयन्ती / पर्यावरण ज्योति संकल्प
- चिकित्सा शिविर
- राखी प्रतियोगिता
- स्वतंत्रता दिवस
- रक्षाबंधन कार्यक्रम
- जन्माष्टमी
- जन्मदिवस कार्यक्रम
- आचार्य विकास कार्यशाला
- फ्री एक्यूपंचर एक्यूप्रेशर कैम्प
- स्वर्णप्राशन संस्कार
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

प्रिय भैया/बहिनों,

आपका विद्यार्थी जीवन शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ, अपने चरित्र और मूल्यों को भी संवारता हैं। मूल्य, हमारे आचरण और निर्णयों की नींव होते हैं, और विद्यार्थी जीवन में इनकी महत्वता को समझना बहुत जरूरी है।

सच्चाई और ईमानदारी

सच्चाई और ईमानदारी मूल्य केवल आपके चरित्र को मजबूत बनाते हैं, बल्कि आपके आत्मसम्मान को भी बढ़ाते हैं।

परिश्रम और आत्म-विश्वास

कड़ी मेहनत और आत्म-विश्वास से आप अपनी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह मूल्य आपको चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

ज्ञानोदय पत्रिका में प्रकाशित विषयों का अनुसरण कर हमारे भैया/बहिन एक जिम्मेदार और सशक्त नागरिक बन सकें तथा मूल्य आपके भविष्य को उज्जवल बनाएंगे और आपको जीवन में सच्ची सफलता की ओर ले जाएंगे।

धन्यवाद ।

अनु सिंह

(अंक संपादक)

प्रधानाचार्य जी की कलम से...

15 अगस्त 1947 यह वह दिन है जब हमारे देश को अंग्रेजों की 200 साल की गुलामी से आजादी मिली थी। ब्रिटिश राज में देश की जनता पर काफी अत्याचार किए गए। ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से देश की जनता को छुटकारा दिलाने के लिए सैकड़ो स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

ऐसे में यह दिन उन महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद करने का भी है जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। देश को आजाद करने में सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, मंगल पांडे, राजगुरु, सुखदेव, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक जैसे कई क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानियों का अहम योगदान रहा।

यह दिन इन सभी क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करने और श्रद्धांजलि देने का दिन है। वैसे तो आज के दिन देश का हर क्षेत्र राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे से भरा दिखता है लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य कार्यक्रम दिल्ली के लाल किले पर होता है। स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से जनता का अभिवादन स्वीकार करते हैं और **"राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा"** फहराते हैं।

भैया- बहिनों आज के दिन हमें प्रण लेना चाहिए कि हम अपने देश के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहें और अपने प्यारे भारत देश को विश्वगुरु बनाने में अपना योगदान दें।

जय हिन्द।

प्रकाश वीर
(प्रधानाचार्य)
स० शि० मंदिर नोएडा

हिन्दी विषय के क्रियाकलाप

कक्षा - अरुण (NURSERY)

गतिविधि-1

विषय - स्वरों की पहचान कराना।

आवश्यक सामग्री- फ्लैश कार्ड, गुथा हुआ आटा।

क्रियाविधि- 1.) भैया/बहिनों को फ्लैश कार्ड के माध्यम से स्वरों की पहचान कराना।

2.) गुथे हुए आटे की सहायता से स्वरों की आकृति भैया बहनों द्वारा बनवाना।

3.) फ्लैश कार्ड के माध्यम से वर्णों का उच्चारण करवाना।

4.) आनंदमय गतिविधि के द्वारा भैया/ बहिन स्वर बनाना सीख रहे हैं।

गतिविधि-2

उप-विषय - स्वरों की पहचान

आवश्यक सामग्री - चॉक ,डस्टर फ्लैश कार्ड, शिशु, कक्षा-कक्ष

क्रियाकलाप – 1. भैया/बहिनों को फ्लैश कार्ड के माध्यम से स्वरों की जानकारी देना

2. चित्रों के द्वारा पहचान कराना।

विकास कौशल- भैया/ बहिनों का मानसिक ,बौद्धिक, मनोमय विकास करना ।

कक्षा – उदय (L.K.G.)

गतिविधि-1

उप-विषय - व्यंजनों की पहचान

आवश्यक सामग्री - श्यामपट्ट, फ्लैश कार्ड, व्यंजनों की माला, चॉक, डस्टर।

क्रियाविधि - 1.) शिशुओं को माला में लिखे वर्ण ,चित्र व शब्द के क्रम में खड़ा करना।

2.) शिशु वर्ण से चित्र को जोड़ रहे हैं।

3.) शिशु चित्र की सहायता से वर्णों को पहचान रहे हैं।

4.) आनंदमय व मनोमय कोश का विकास करते हुए शिशु वर्णों की पहचान कर सकते हैं।

गतिविधि-2

उप-विषय - व्यंजनों की पहचान

आवश्यक सामग्री - श्यामपट्ट, फ्लैश कार्ड, व्यंजनों की माला, चॉक, डस्टर।

क्रियाविधि - 1.) शिशुओं को बिना मात्रा के शब्द व चित्र लेकर क्रम में खड़ा करना।

2.) शिशु दो वर्णों को जोड़ कर बिना मात्रा के शब्द बना रहे हैं।

3.) शिशु चित्र की सहायता से शब्दों को पहचान रहे हैं।

4.) मनोमय कोश का विकास करते हुए शिशु वर्णों को जोड़ कर शब्द बना सकते हैं।

कक्षा – प्रभात (U.K.G.)

गतिविधि-1

उप-विषय - आ की मात्रा के शब्दों की पहचान करना।

आवश्यक सामग्री- श्यामपट्ट, फ्लैश कार्ड, चित्रपोथी, आ की मात्रा का मुकुट, दैनिक प्रयोग की वस्तुएं।

क्रियाविधि- 1.) व्यंजनों को एक साथ जोड़कर भैया/बहिनों द्वारा आ की मात्रा के शब्द बनवाना।

2.) चित्रों को देखकर सही शब्द की पहचान करना।

3.) फ्लैश कार्ड के माध्यम से शब्दों का उच्चारण करवाना।

4.) आनंदमय गतिविधि के द्वारा भैया/ बहिन आ की मात्रा के नए-नए शब्द बनाना सीख सकेंगे।

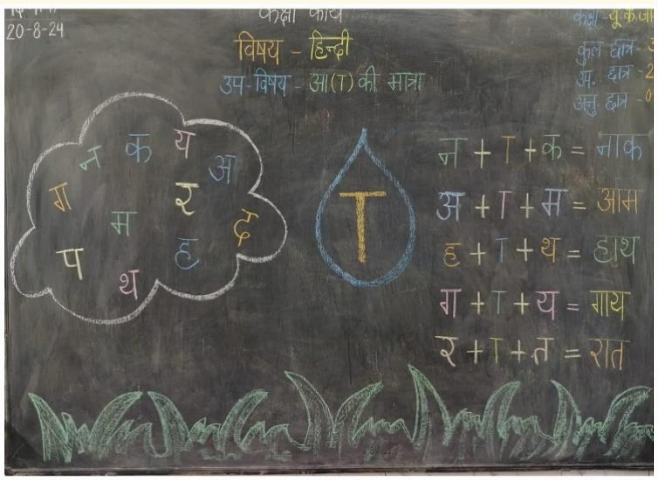

गतिविधि-2

उप- विषय- हिन्दी में फलों के नाम की पहचान कराना।

आवश्यक सामग्री- श्यामपट्ट फ्लैश कार्ड, चित्रपोथी, फलों के चित्रो की माला, चॉक ।

क्रियाविधि-1) फलों की माला भैया/बहिनों को पहनाकर उनसे फल की पहचान करवाना।

2) फल दिखाकर भैया/बहिनों से फल का नाम बुलवाना।

3) फल के अलग-अलग फ्लैश कार्ड दिखाकर भैया/बहिनों को फल के नाम बताना।

4) क्रिया कलापों द्वारा भैया बहन नये-नये फल के नाम सीख रहे हैं।

कक्षा – प्रथम (1ST)

गतिविधि-1

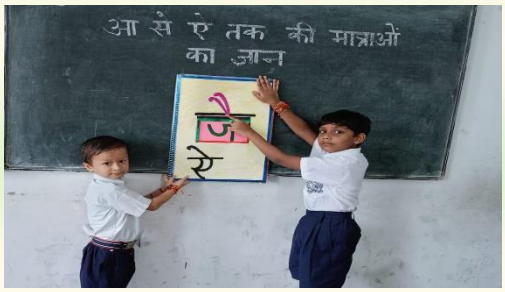

आ से ऐ तक की मात्राएं

उद्देश्य - 1.**आ से ऐ तक की मात्राओं का ज्ञान कराना।**

2. **मात्राओं के चिन्ह की पहचान करवाना।**
3. **मात्रा जोड़कर शब्द बनवाना।**
4. **मात्राओं वाले शब्दों को लिखवाना एवं पढ़ना**
5. **मात्राओं का सही उच्चारण सिखाना।**
6. **मात्रा वाले शब्दों को सुनकर लिखना सिखाना।**

गतिविधि-2

फलों एवं सब्जियों के नाम

उद्देश्य -

1. फलों एवं सब्जियों के नाम याद कराना।
2. फल एवं सब्जियों के आकार एवं रंग का ज्ञान करना।
3. फल एवं सब्जियों के पोषक तत्वों के बारे में जानकारी देना।
4. भैया/बहिनों को फल एवं सब्जी खाने के फायदे बताना।
5. विभिन्न फल एवं सब्जियों के स्वाद की जानकारी करना।

कक्षा – द्वितीय (2nd)

गतिविधि -1

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु ,स्थान आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण -.

नरेंद्र मोदी

इंडिया गेट

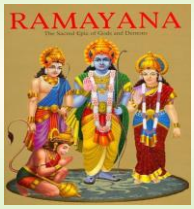

किताब

उद्देश्य -.

1 . **शिशु संज्ञा की परिभाषा जान जायेंगे !**

2. **शिशु को संज्ञा के उदाहरण की जानकारी हो जाएगी !**

3. **दुनिया के सभी व्यक्ति, वस्तु ,स्थान के नाम का ज्ञान हो जाएगा !**

गतिविधि -2

जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते हैं।

उदाहरण -. लड़का - लड़की

पिता - माता

उदेश्य -

1 -. शिशु लिंग की परिभाषा जान जायेंगे !

2-. शिशु पुल्लिंग, और स्त्रीलिंग को जान जायेंगे! !

3. - शिशु पुल्लिंग, और स्त्रीलिंग को बदलना जान जायेंगे! !

कक्षा – तृतीय (3rd)

गतिविधि -1

उद्देश्य – भैया / बहिनों को वचन का ज्ञान कराना।

एक वचन संज्ञाएँ - एक वचन संज्ञा एक ऐसा शब्द है जो दर्शाता है कि कोई वस्तु किसी एक व्यक्ति या वस्तु से संबंधित है।

बहुवचन संज्ञाएँ - बहुवचन संज्ञाएँ एक ऐसा शब्द है जो दर्शाता है कि कोई वस्तु एक से ज्यादा व्यक्तियों या वस्तुओं से संबधित है।

क्रियाकलाप – भैया/ बहन विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को लेकर तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधि करके एकवचन व बहुवचन को प्रस्तुत कर रहे है|

जैसे - बोतल – बोतलें, किताब-किताबे, बस्ता- बस्ते, एक-अनेक आदि।

निष्कर्ष - निम्न क्रियाकलाप से भैया / बहिनों को एकवचन व बहुवचन का ज्ञान हो गया है।

गतिविधि -2

उद्देश्य - भैया/बहिनों को विलोम शब्द का ज्ञान कराना।

विलोमशब्द - विलोम शब्द वह शब्द होते है जो अपने अर्थ के विपरीत या उल्टे होते हैं।इन शब्दों का उपयोग भाषा में विविधता और व्यंग्य को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। यह एक मजेदार और रचनात्मक तकनीक है।

क्रियाकलाप - भैया/बहिन विभिन्न प्रकार की गतिविधि का प्रयोग करते हैं|

जैसे - संकेत द्वारा ऊपर-नीचे, खय्य-मीठा, छोटा-बड़ा, गर्म-ठंडा आदि।

निष्कर्ष - निम्न क्रियाकलाप से भैया/बहिन बहुत आसानी से विलोम शब्द सीख गये हैं।

कक्षा – चतुर्थ (4th)

गतिविधि -1

उद्देश्य - भैया / बहिनों को विभिन्न वस्तुओं के माध्यम से संज्ञा एवं उसके भेदों को समझाना।

- **सीखे गये ज्ञान को परिवेश से जोड़ने के कौशल का विकास करना।**
- **क्रियाकलाप के माध्यम से आत्मविश्वास में वृद्धि करना।**

आवश्यक सामान- फ़्लैश कार्ड, सेब, पुस्तक कलम आदि।

क्रियाकलाप - भैया / बहिनों को गतिविधि द्वारा संज्ञा की परिभाषा एवं उसके भेदों को उदाहरण सहित समझाना|

किसी वस्तु प्राणी भाव गुण स्थान या पदार्थ के नाम को संज्ञा कहते है । जैसे- सेब ,पुस्तक, कलम ,कुर्सी ,नोएडा आदि।

संज्ञा के पाँच भेद होते है -

- **व्यक्तिवाचक संज्ञा- मोहन, गंगा।**
- **जातिवाचक संज्ञा - आदमी, बच्चा।**
- **पदार्थवाचक संज्ञा पानी,, सोना।**
- **भाव वाचक संज्ञा- हँसी , ,ईमानदारी।**
- **समूहवाचक संज्ञा- गुलदस्ता, चाबी का गुच्छा।**

भैया/ बहिन संज्ञा शब्दों के फ़्लैश कार्ड लेंगे तथा संज्ञा के भेद के सामने सही कार्ड लगायेंगे ।

गतिविधि -2

विषय- विलोम शब्द

उद्देश्य-

- **भैया / बहिनों के शब्द भंडार में वृद्धि करना ।**
- **भैया / बहिनों के पूर्व ज्ञान को जागृत करना ।**
- **गतिविधि के माध्यम से व्याकरण का महत्व समझाना।**

क्रियाकलाप - मछली की आकृति पर लिखे गए विलोम शब्दों के द्वारा भैया-बहिनों को उनकी जानकारी देना । भैया / बहिन सहायक पाठ्यसामग्री मछली पर दोनों तरफ़ लिखे गए शब्दों एवं उनकें विलोम शब्दों को पलट कर बोलेंगे तथा अर्थ को समझेंगे।

जैसे- अच्छा – बुरा , ऊपर - नीचे

आगे - पीछे , अंदर - बाहर

कक्षा – पंचम (5th)

गतिविधि -1

वर्णों का उच्चारण स्थल

सामग्री - फ्लैश कार्ड, ब्लैकबोर्ड,भैया/बहिन।

गतिविधि- 1. ब्लैक बोर्ड पर व्यंजन के वर्ग व उच्चारण स्थल लिख दिए तथा नीचे की तरफ व्यंजन के फ्लैश कार्ड चिपका दिए।

2.कक्षा में से एक-एक करके भैया/बहिन को बुलाया तथा नीचे चिपके फ्लैश कार्ड में से वर्णमालानुसार वर्ण उठाकर उसका उच्चारण करके उचित उच्चारण स्थल के सामने चिपकाने के लिए कहा।

3.इस गतिविधि के माध्यम से भैया/बहिनों को वर्णमाला का पुनराभ्यास हुआ तथा वर्णों के उचित उच्चारण स्थल का ज्ञान हुआ।

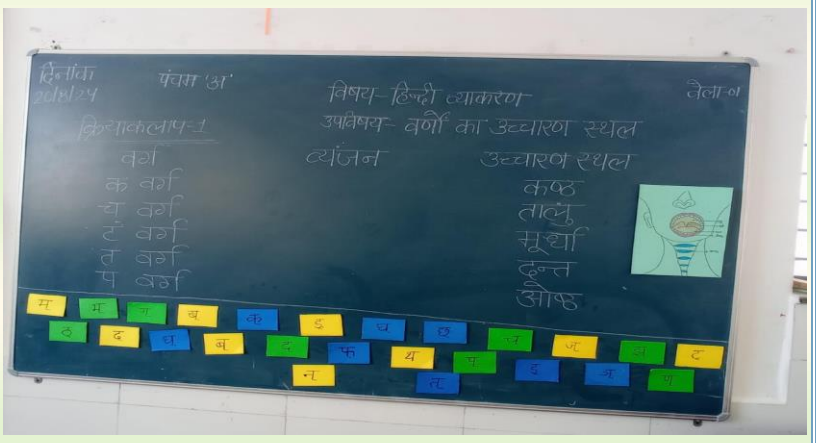

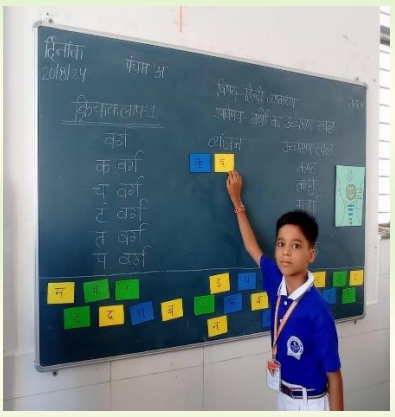

गतिविधि - 2

तत्सम-तद्भव शब्द

सामग्री - फ्लैश कार्ड, ब्लैकबोर्ड,भैया/बहिन।

गतिविधि-

1. **ब्लैकबोर्ड पर कुछ तत्सम-तद्भव शब्दों के फ्लैश कार्ड चिपका दिए।**
2. **कक्षा के कुछ भैया/बहिनों को बुलाकर रिक्त स्थान के सामने उचित तत्सम- तद्भव शब्दों के फ्लैश कार्ड छांटकर चिपकाने के लिए कहा।**
3. **इस गतिविधि के माध्यम से भैया/बहिन तत्सम-तद्भव शब्दों में अंतर समझ गए।**

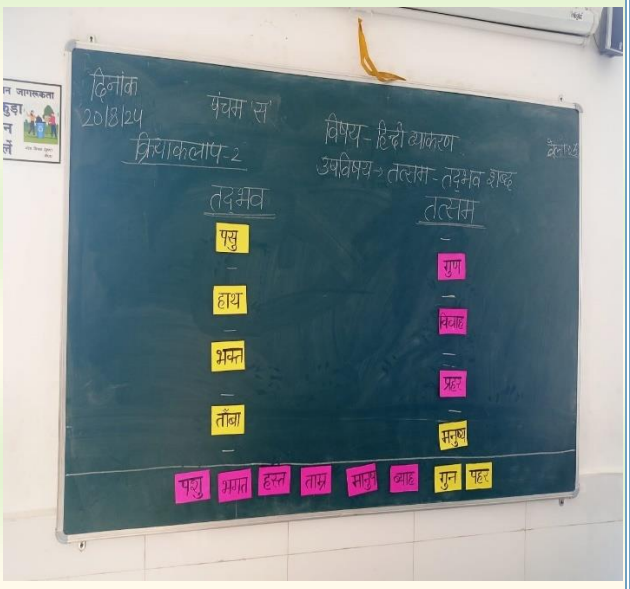

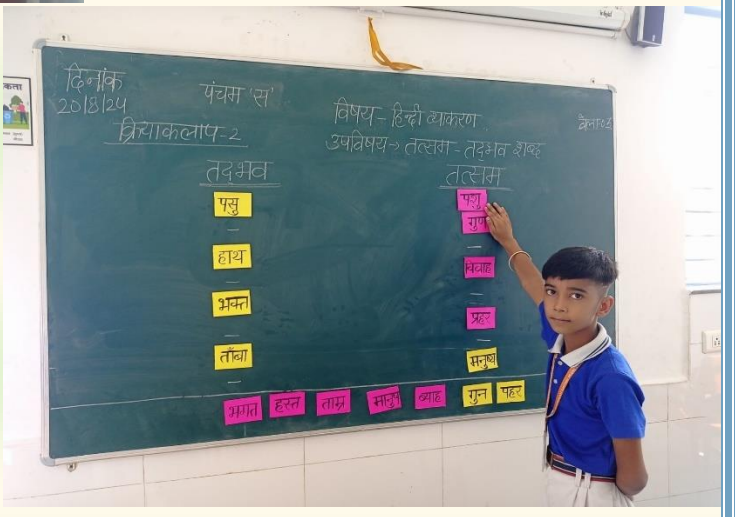

लेख-(उत्सव, जयन्ती एवं दिवस)

शिक्षक दिवस

शिक्षा ही हमारे समाज के उत्थान की कुंजी है और शिक्षक ही इस कुंजी के धारक होते हैं। शिक्षकों का हमारे जीवन में महत्त्व रेखांकित करने के लिए शिक्षक दिवस हर साल 5 सितंबर को मनाया जाता है। शिक्षक हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे हमें ज्ञान और समझ प्रदान करते हैं, जो हमारे विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षक दिवस के दिन हम अपने शिक्षकों के प्रति आभार और समर्पण की भावना प्रकट करते हैं। हम उनके साथ अपने अनुभव साझा करते हैं। शिक्षक न केवल ज्ञान के दाता होते हैं, बल्कि वे हमारे मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत भी होते हैं।

शिक्षक दिवस का महत्व यह भी है कि यह हमें याद दिलाता है कि शिक्षा हमारे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षकों के बिना कोई भी समाज प्रगति नहीं कर सकता, और इसलिए हमें उनके प्रति गहरा समर्पण और आभार दिखाना चाहिए। वे न केवल हमें पढ़ाते हैं, बल्कि हमारे चरित्र का निर्माण भी करते हैं, और इस दिन के माध्यम से हम उनके योगदान के लिए सराहना करते हैं और उनके प्रेरणास्पद शिक्षण के लिए धन्य मानते हैं।

शिवानी शर्मा

स०शि०म०,नोएडा

हिन्दी दिवस

"हमारी एकता और अखंडता ही हमारे देश की पहचान है, हिंदुस्तान है हम और हिंदी हमारी जुबान है"

हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।जो भाषा की वैश्विक पहचान और इसके प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित। इस दिन का उद्देश्य केवल हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार करना नहीं बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि हिंदी विश्व भर में अपने एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखें और लोगों के बीच इसके प्रति जागरूकता पैदा हो

विश्व हिंदी दिवस का इतिहास

विश्व हिंदी दिवस की शुरुआत 1975 में नागपुर भारत में हुई थी इस दिन को मनाने का विचार हिंदी भाषा के व्यापक प्रसार और इसके विकास को गति देने के लिए किया गया था पहला विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर में आयोजित हुआ था जहां दुनिया भर के हिंदी विद्वानों और साहित्यकारों ने हिस्सा लिया 10 जनवरी 2006 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा इस दिन को अधिकारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस के रूप में घोषित किया गया। तब से यह दिन भारत सहित दुनियाभर के देशों में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को दुनिया भर में मजबूत और समृद्ध भाषा के रूप में प्रस्तुत करना

हिंदी की वैश्विक पहचान

विश्व हिंदी दिवस 2024 की थीम- "हिंदी पारंपरिक ज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमता के बीच हेतु है"

हिंदी आज के भारत तक सीमित है बल्कि यह विश्व के विभिन्न देशों ने भी व्यापक रूप से बोली जाए। फिजी, मॉरिशस, टोबैगो, नेपाल और कई अन्य देशों में हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या काफी अधिक। हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषाओं में सिक्के और इंटरनेट के प्रसार के साथ यह भाषा डिजिटल जगत में भी अपनी महत्वपूर्ण पहचान बना रही।

विश्व हिंदी दिवस की महत्ता

विश्व हिंदी दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं है बल्कि यह दिवस हिंदी भाषा के प्रति सम्मान और गर्व व्यक्त करने का एक अवसर है यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारी भाषा हमारी संस्कृति धरोहर है और इसे संरक्षित और विकसित करना हमारी जिम्मेदारी हैं।

निष्कर्ष

विश्व हिंदी दिवस हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और गौरव को जागृत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है यह हमें हमारी सांस्कृतिक और भाषण विरासत के प्रति जागरूक करता है और हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी भाषा को दुनिया में और अधिक प्रभावी और व्यापक रूप में व्यक्त करें।

हिंदी न केवल भारत के आत्मा, बल्कि यह विश्व की सशक्त और समृद्ध भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही

शिवानी शुक्ला

स०शि०म०,नोएडा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म एक प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित हरिराम उपाध्याय के वंश में उत्तर प्रदेश मथुरा जिले में, नगला चन्द्रभान ग्राम में हुआ था।

25 सितम्बर 1916 सोमवार सूर्योदय के शुभ अवसर पर माता रामप्यारी ने पुत्रमुख देखा। सभी उन्हे "दीना" कहकर पुकारने लगे। दीनदया जी के पिताजी भगवती प्रसाद जी रेलवे में कर्मचारी थे। नौकरी के कारण वे घर से बाहर ही अधिक रहते थे। दीना की जन्मपत्रिका देखकर ज्योतिषियों ने कहा था कि "लडका विद्वान होगा। निःस्वार्थ कार्यकर्ता बनेगा। दीन-दुखियों से प्यार करेगा। जननायक बनेगा।" परिवार में एक ओर आनंद था तो दूसरी ओर व्यथा । दीना को शिवदयाल नाम का छोटा भाई था। शिबु छः माह का था तब भगवती प्रसाद जी ने पत्नी तथा बच्चों को उनके मायके भेजा। घर मे बच्चों के नाना चुत्रीलाल तथा मामा राधारमण थे। अचानक पिता की मृत्यु का समाचार मिला। अतीव दुःख से माताजी का स्वास्थ्य बिगड गया। वह टी.बी. की शिकार बनीं। चार वर्ष के बाद वह भी चल बसी। दोनों बच्चे अनाथ हो गये। माता के वियोग से बच्चों के मनपर बहुत बुरा परिणाम हुआ। नानाजी परिस्थिति से विवश होकर अपनी नौकरी छोड कर बच्चों के साथ गांव लौट गये। नाना-नानी का प्रेम ही बच्चों का सहारा बना।

एक दिन एक विचित्र घटना हुई। रात्रि के 11- 12 बजे होंगे हमेशा के अनुसार दीना अपनी मौसी के पास बैठकर गप्पें लगा रहा था। घर की शेष स्त्रियां वहीं बैठकर बातचीत में मग्न थीं। एकाएक 10-12 चोरों ने घर पर हमला बोल दिया। दीना को घसीट कर जमीन पर पटक दिया गया। उसकी छाती पर पैर रखकर मार डालने की धमकी दी गयी। "बताओ कहां है घर का जवाहरात ? दे दो नहीं तो मार डालेंगे।" तभी दीनदयालजी ने अपनी खास शैली में कहा, "मैंने सुना है कि चोर लोग श्रीमानों को लूटकर गरीबों का सरंक्षण करते हैं। परंतु आप मेरे जैसे गरीब को मार रहे हैं। यह तो आश्चर्य है?" इसे सुनकर चोरों के नेता का मन विचलित हुआ। दीना को छोड कर साथियों को लेकर वह लौट गया।।

बच्चों की पढाई के लिए नाना चुन्नीलाल जीने उन्हें उनके मामा राधारमण के घर गंगापुर भेज दिया। गंगापुर में दीना का प्राथमिक शिक्षण प्रारंभ हुआ। तब उनकी आयु 9 वर्ष थी।

सितंबर 1926 में नाना चुन्नीलाल का भी स्वर्गवास हुआ। मामा राधारमण को कई समस्याओं ने घेरा। दीना, शिबु तथा उनके अपने बच्चों का पालन-पोषण शिक्षा आदि....।

दुर्भाग्य से राधारमणजी को भी क्षय की बीमारी लग गयी। वैद्यों ने कहा कि उनका बचना कठिन है। खुद के गांव में, भरतपुर तथा आग्रा में भी उन्हें औषधि देने से वैद्यों ने इन्कार किया। तब क्या किया जाय ? अन्त में लखनऊ के उनके एक संबंधी ने अपने यहां बुलाया। परंतु उन्हें वहां कौन ले जायेगा ? वह छूत की बीमारी, कहीं अपने को न लग जाय इस भय से उनके पास कोई भी नहीं फटकता था। उस समय दीना मात्र 11 वर्ष का था। वह साथ में चलने को तैयार हुआ। मामा को सहमति देनी ही पडी । दीनदयालजा की परीक्षा भी निकट आ रही थी। मामा की सेवा में दीना का और किसी बात की ओर ध्यान नहीं था। राधारमणजी के स्वास्थ में कुछ सुधार होने लगा। दीना गंगापुर लौटकर परीक्षा देने गया। सभी को आश्चर्य व आनंद हुआ । दीनदयालजी ने प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विधि शर्मा

स०शि०म०,नोएडा

सेवा वस्ती के भैया/बहिनों को बैग वितरण

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के वंदना सत्र में आज सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक 82 वर्षीय श्री महावीर सिंह जी का जन्मदिन मनाते उनके परिजन ।

मेहंदी प्रतियोगिता

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक 7-8-24 को हरियाली तीज के अवसर पर भैया/ बहिनों की मेहन्दी प्रतियोगिता के छायाचित्र ।

सहज योग ध्यान

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

श्रीमद्भागवत कथा
ज्ञानयज्ञ
सहज योग
प्रवेश विनामूल्य

vivo Y56

तुलसीदास जयन्ती/ पर्यावरण ज्योति संकल्प

विद्यालय में दिनांक- 09/08/2024 को तुलसीदास जयन्ती व पर्यावरण ज्योति संकल्प मनाया गया । इस अवसर पर संगीता जी (आचार्या) ने इनके महान कृतित्व व पर्यावरण संरक्षण के बारे में भैया/बहिनों को महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चिकित्सा शिविर

भारत विकास परिषद, नौएडा
मेगा हेल्थ चेक अप कैंप
सरस्वती शिशु मंदिर
I L A
I Love All

I L A
I Love All
ILA Foundation (Reg. No-832)
FREE HEALTH CHECKUP CAMP
ASCENDING ORDER

मेगा हेल्थ चेक अप कैंप
सरस्वती शिशु मंदिर

राखी प्रतियोगिता

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक 12-8-24 को राखी के अवसर पर भैया/ बहिनों की राखी प्रतियोगिता के छायाचित्र ।

स्वतंत्रता दिवस

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दि0 -15/08 /2024 को 78वां स्वतंत्रता दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर माननीय ब्रिगेडियर राजबहादुर शर्मा जी, कमांडर विनोद गुप्ता जी, दिनेश गोयल जी (अध्यक्ष) , प्रदीप भारद्वाज जी,उमानंदन कौशिक जी , दिनेश महावर जी, प्रधानाचार्य जी व समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

रक्षाबंधन कार्यक्रम

विद्यालय में दिनांक-17.08.24 को रक्षा बन्धन कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के भैया/बहिनों ने अलग-अलग जगहों पर जाकर राखी बाँधी।

जन्माष्टमी

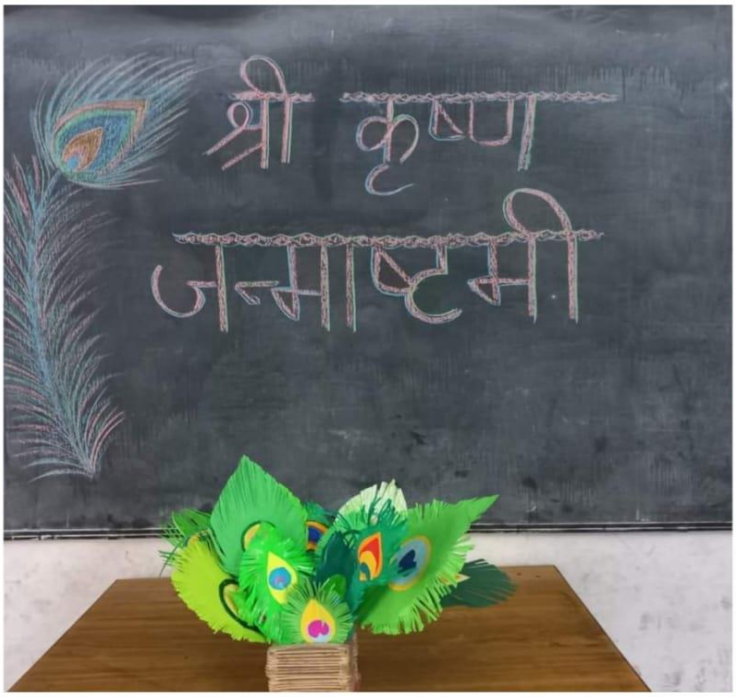

विद्यालय में दिनांक-24.08.24 को भगवान श्रीकृष्ण जी का जन्म दिवस बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया।

जन्मदिवस कार्यक्रम

अगस्त माह में जन्मे शिशुओं के लिए दिनांक -30.08.24 को विद्यालय में हवन- पूजन कार्यक्रम किया गया ।

आचार्य विकास कार्यशाला

साइकोलॉजिस्ट पायल गुप्ता द्वारा आचार्य विकास की दृष्टि से 31/08/24 को काउंसलिंग की गई।

फ्री एक्यूपंचर एक्यूप्रेशर कैम्प

दिनांक- 31.08.2024 को विद्यालय में आयोजित एक्यूपंचर एक्यूप्रेशर कैम्प के छायाचित्र।

ऑल इंडिया कराटे चैंपियनशिप में स्थान प्राप्त विद्यालय के भैया अर्नव.....

स्वर्णप्राशन संस्कार

शिशुओं में संस्कार विकसित हो इस दृष्टि से दिनांक-31.08.2024 को विद्यालय में स्वर्ण प्राशन के कार्यक्रम को आचार्या इन्दु गुप्ता जी ने संपन्न कराया इस कार्यक्रम में लगभग 300 शिशुओं ने भाग लिया।

वर्ग पहेली

वर्ग पहेली

निम्नलिखित क्रिया शब्दों को खोजें तथा रंग भरे।

क	र	ना	या	ले	ना	म	त	प	न
खे	ना	मी	रो	चि	ल	छि	हा	त	का
चि	की	हँ	स	ना	सो	न	तो	झ	नि
प	मः	खे	सो	वः	च	च	ड़	ड	लि
क	च	र	खा	च	क	बी	ना	झा	ख
ना	थी	फी	फै	ल	ना	डी	ल	द	ना
दी	हु	प	ढ़	ना	ओ	म	टी	फु	झा
कु	लि	फे	जा	ठ	दी	लि	ना	क	ल
बो	ल	ना	छ	रु	च	कः	अ	बै	जी
ई	मा	र	त	जे	माँ	थ	ना	ठ	खु
सो	ख	फा	र	खे	पे	रु	था	ना	रा
च	ज	मा	बू	ल	ल	सो	क	डा	झो
ना	भा	घा	ज	खो	ना	ना	घ	का	या
कि	ठ	ग	डा	मै	मा	में	मा	लो	दे
झे	खा	टी	ना	क	सी	धा	ना	का	ख
गू	झा	ग	बे	खा	मा	ना	मा	र	ना
ना	ता	न	हा	ना	सी	झे	ने	ना	बा
ग	पी	था	ना	रा	पा	ई	आ	ना	लू
वि	रा	ना	धा	डा	वा	ने	उ	ठ	ना

करना
चलना
पढ़ना
खेलना
सोना
फैलना
बैठना
नहाना
बोलना
भागना

मारना
देखना
तोड़ना
खाना
उठना
हँसना
रोना
लिखना
सोचना
पीना

आलोक- कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया /बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 40 में दिए गए। प्रश्नो के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 10 सितम्बर 2024 तक भेजने होंगे, जिससे आपके आने वाली परीक्षा में उनके अंक दिए जा सकें।